लोक साहित्य
डा. व्यास नारायण दुबे

## छत्तीसगढ़ी की उपभाषा है कलंगा

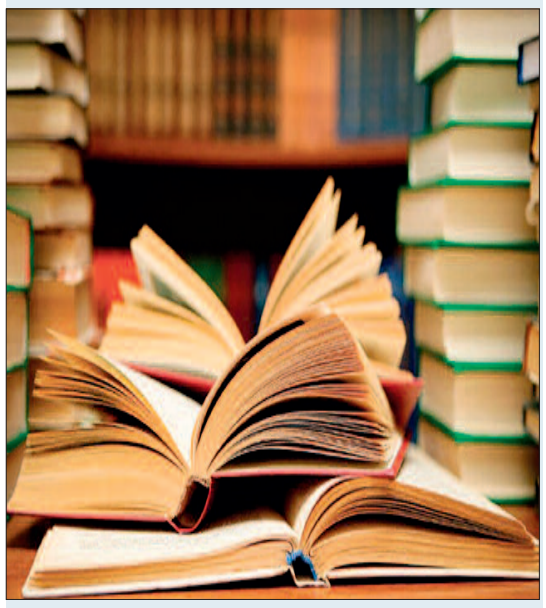

कलंगा को छत्तीसगढ़ी की एक उपभाषा मानी जाती है जो उड़ीसा प्रदेश के पश्चिमी भाग एवं छत्तीसगढ़ के पूर्वी सीमा प्रदेशों में बोली जाती है। वस्तुतः कलंगा भाषिक रुप का व्यवहार क्षेत्र उड़िया में ही स्थित है। यह भाषिक रुप भी उड़िया लिपि में ही लिखी जाती है। इसी कारण इसे उड़िया की उप भाषा समझा जाता रहा है, किंतु जार्ज अब्राहम ग्रियर्सन के अनुसार कलंगा एक स्वतंत्र बोली कहलाने की क्षमता नहीं रखती, क्योंकि यह अशिक्षित व्यक्तियों द्वारा बोली जाने वाली मात्र विकृत रूप है। कलंगा के व्याकरणिक रूपों के आधार पर सर्वप्रथम ग्रियर्सन ने ही इसे छत्तीसगढ़ी की एक उप भाषा स्वीकार किया है।

सुरता
श्रीमती किरण राठौर

## डा. शंकर शेष का रचना संसार

छत्तीसगढ़ के साहित्यकारों में डा. शंकर शेष का भी काफी योगदान रहा है। आपका जन्म 2 अक्टूबर 1933 को बिलासपुर जिले के जूना में हुआ था। डा. शंकर शेष की रचनाओं ने जीवन, समाज और मानव चरित्र की विभिन्न पहलुओं को अपनी लेखनी से मूर्त किया है। स्वाधीनता के पश्चात सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक पृष्टभूमि को बिखेरने में डा. शंकर शेष ने अदभुत प्रतिभा का परिचय दिया। आपने 1955 से लेकर 1981 तक की साहित्य सरिता की यात्रा में बाईस नाटक, सात एकांकी, दो बाल नाटक, चार अनुदित नाटक, चार उपन्यास, तीन शोध प्रबंध, दो पट कथा एवं संवाद लेखन द्वारा साहित्य के विकास में अहम योगदान दिया। कभी रंगमंच तो कभी आकाशवाणी या दूरदर्शन और मंचन आदि के माध्यम से नाटक को ऊंचाई देने में आपने कोई कमी नहीं की। अड़तालीस वर्ष की अल्पायु में 24 अक्टूबर 1981 को आपका निधन हो गया।

### पुस्तक समीक्षा

## युग युगीन छत्तीसगढ़

कृति के नाव
युग युगीन छत्तीसगढ़

लेखक
डा. सुशील त्रिवेदी

प्रकाशक
वैभव प्रकाशन रायपुर

पुस्तक समीक्षा
डा. डी पी देशमुख

मूल्य
दो सौ पचास रुपए

छत्तीसगढ़ अंचल हा कोनो किसम ले कमी के अहसास नी कराय। लोक कला, साहित्य, पर्यटन, तीज तिहार सबो ह समृद्ध हे, येहा ये मेर किताब ' युग युगीन छत्तीसगढ़ ' ले प्रमाणित हो जथे। ए किताब में छत्तीसगढ़ के नामकरण, इहा के संस्कृति, शिल्प कला, साहित्य सर्जना, इतिहास, जन जातीय परंपरा अऊ पुरातत्व ले संबंधित जानकारी हावय। ए किताब हा हमर नवा पीढ़ी के अच्छा मार्गदर्शन करही।

रामायण के रचना काल में मध्यप्रदेश में मनुष्यों की बस्ती आरंभ हो गई थी और महाभारत के युद्ध के समय महाकोसल राज्य स्थापित हो गया था। पांच पांडवों में से अर्जुन का पुत्र बभ्रुवाहन चित्रांगदपुर में राज्य करता था।

# पांडवों का संबंध रहा महाकोसल में

ऐतिहासिक : मावली प्रसाद श्रीवास्तव

मध्यप्रदेश का पूर्वी हिस्सा छत्तीसगढ़ कहलाता है। प्राचीन समय में इसे महाकोशल अथवा दक्षिण कोसल कहते थे। महानदी के किनारे राजिम के उत्तर पूर्व की ओर उजड़ा सा गांव सिरपुर महाकोसल की राजधानी थी। रामायण के रचना काल में मध्यप्रदेश में मनुष्यों की बस्ती आरंभ हो गई थी और महाभारत के युद्ध के समय महाकोसल राज्य स्थापित हो गया था। पांच पांडवों में से अर्जुन का पुत्र बभ्रुवाहन चित्रांगदपुर में राज्य करता था। इतिहासकारों ने

यह सिद्ध किया कि सिरपुर का ही दूसरा नाम चित्रांगदपुर था। सिरपुर से मिले अभिलेखों से पता चलता है कि बभ्रुवाहन वंशज चौथी शताब्दी में यहां राज करते थे। इससे स्पष्ट हो जाता है कि यहां के राजा पांडव थे। पता चलता है कि इस वंश के पहले राजा का नाम इंद्रबल था। सिरपुर के गंधेश्वर मंदिर की दीवार में लेख के अनुसार वंशजों के क्रम में पहले इंद्राबल( 319 ई. )इसके बाद नंददेव, चंद्रगुप्त, हर्षगुप्त, शिवगुप्त, भावगुप्त और अंत में शिवगुप्त (475 ई.) का नाम है।

# घने जंगलों के बीच अनोखा है बिहारपुर जलप्रपात

पर्यटन : विनोद कुमार पांडेय

छत्तीसगढ़ के कोरिया अंचल में बैकुंठपुर -कठौतिया चौक से बिहारपुर -जनकपुर मार्ग पर ग्राम बिहारपुर मुख्य मार्ग से 2 कि मी अंदर ऊबड़ खाबड़ रास्ते से होते हुए हसदेव नदी के छोटे से पुल को पार करते हुए बिहारपुर जलप्रपात पहुंचा जाता है। यह बिहारपुर ग्राम में होने के कारण बिहारपुर जलप्रपात कहलाता है। घने जंगलों के बीच होने के कारण जंगली जानवरों को कभी कभी विचरण करते देखा जा सकता है। नदी का पानी 20 -25 फीट ऊंचाई से गिरने के कारण विहंगम प्रपात सा दिखाई देता है। यहां पिकनिक मनाने दूर दूर से वर्ष भर पहुंचते रहते हैं।

कलाकृति
नर्मदा प्रसाद ताम्रकार

## अलग पहचान है धमधा के शिल्प कला की

दुर्ग जिले का धमधा कभी धमधागढ़ हुआ करता था। यहां हैहयवंशीय राजाओं के शासन काल में बनी इमारतें आज खंडहर का रूप ले चुकी हैं। छत्तीसगढ़ ही नहीं वरन समूचे भारत में धमधा के कारीगरों की बनाई गई धातु की मूर्तियां एवं कांसे से बने कलात्मक पात्र की बहुत प्रसिद्धि थी। कांसे के बर्तन और मूर्तियां बनाने का कार्य यहां ताम्रकार परिवार के लोग ही करते थे। यह ताम्रकार कांसे के अलावा तांबा और पीतल के बर्तन भी बनाते हैं। पहले यहां ताम्रकारों की संख्या डेढ़ हजार थी, जो अब घट कर डेढ़ सौ हो गई है। मूलतः इनके पूर्वज सिक्कों की ढलाई का काम करते थे। सिक्कों की ढलाई के अलावा राज प्रसाद के लिए उत्तम कलाकृति युक्त सजावटी मूर्तियों या पात्र या अन्य उपयोगी बर्तनों का निर्माण भी करते थे। 1956 से लेकर 1960 तक यहां के कारीगरों द्वारा निर्मित कांसे के गहने अंतर्राष्ट्रीय बाजार में स्थान पाने लगे थे। इनके बनाए गए उत्पाद की मांग देश भर में होती रही है। यहां कच्चा माल विदेशों से आयात किए जाते थे। इसमें शासन द्वारा निर्धारित दर में इन्हें वस्तुएं प्राप्त हो जाती थी, इस कारण बड़े उत्साह के साथ कारीगर काम कर मुनाफा कमाते थे, लेकिन धीरे धीरे इस व्यवस्था को बंद कर देने से इस उद्योग पर संकट गहराने लगा।इस तरह वर्तमान में कच्चे माल की कमी, ढुलाई खर्च महंगा तथा वस्तु महंगे होने के कारण इनका कार्य सिमटता जा रहा है।

लोक नाट्य
डा. देवेश दत्त मिश्रा

## छत्तीसगढ़ में लोक नाट्य परंपरा

**छत्तीसगढ़ में लोक नाट्य परंपरा की शुरुआत कब हुई, इसका उल्लेख कहीं नहीं मिलता। विद्वानों की राय में ' लोक नाट्य का प्रारंभ ठीक उसी तरह है जैसे गंगा का हिमालय से निकलना।' अनुमान लगाया जाता है कि जिस दिन मनुष्य ने अनुकरण करना सीखा, बोली का प्रस्फुटन हुआ तभी से लोक नाट्य का प्रारंभ हुआ।**

पहले समाचार पत्र नहीं होने तथा पढ़े लिखे लोग कम होने के कारण उचित दस्तावेजीकरण नहीं हो पाया। लेकिन लोक नाट्य की अभिरुचि ने लोगों को मनोरंजन का और आनंद का अवसर प्रदान किया लोक नाट्य की दो धाराएं होती हैं एक धार्मिक और दूसरा लौकिक। प. सुंदरलाल शर्मा ने बीसवीं सदी के प्रथम दशक में सीता प्रणय और प्रहलाद चरित्र सहित पांच धार्मिक नाटकों की रचना की थी। इससे स्पष्ट होता है कि उस समय नाटकों की परंपरा रही है। यह भी स्पष्ट है कि उससे भी पहले लोक नाट्य छत्तीसगढ़ में विद्यमान थे। यदि सरगुजा के सीता बेंगरा और जोगीमारा की गुफाओं में रामगढ़ में निर्मित रंगशाला, यहां के निवासियों का रुझान नाटक की ओर प्रदर्शित करता है तो निश्चय है कि उससे तीसरी सदी के पूर्व यहां लोक नाट्यों में लोगों का रुझान रहा होगा। अर्थात छत्तीसगढ़ में लोक नाट्यों की प्राचीन परंपरा ईसा पूर्व से रही है।